तद्धिताः

यह अधिकार सूत्र है।
शब्दार्थ है -(तद्धिताः) तद्धित होते हैं।
इसका अधिकार पञ्चम अध्याय के अन्तिम सूत्र 'निष्प्रवाणिश्च' तक है।
इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा —
इस सूत्र से लेकर 'निष्प्रवाणिश्च' तक जिन प्रत्ययों का विधान किया गया है, उन्हें तद्धित कहते हैं।
तद्धित संज्ञा करने का फल है - तद्धितान्त शब्दों की प्रातिपदिक संज्ञा 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से होना।

अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः

यह विधिसूत्र है।
सूत्र का शब्दार्थ है — (अव्ययीभावे) अव्ययीभाव में (शरत्प्रभृतिभ्यः) शरद् आदि से ___।
किन्तु होता क्या है - यह जानने के लिए 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' से 'टच्' की अनुवृत्ति करनी होगी।
'समासान्तः' का अधिकार प्राप्त है।
इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा -

अव्ययीभाव में 'शरद्' आदि से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। 'टच्' में टकार और चकार इत्संज्ञक है, अतः केवल 'अ' ही शेष रहता है।
उदाहरण के लिए — 'शरदः समीपम्' (शरद के समीप) — इस विग्रह में समीप अर्थ में वर्तमान 'उप' अव्यय का 'अव्ययं विभक्ति०' से सुबन्त 'शरदः' के साथ समास होकर 'उपशरद्' रूप बनता है।
इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से तद्धित प्रत्यय 'टच्' होकर 'उपशरद् अ' 'उपशरद' रूप बनने पर प्रातिपदिक संज्ञा हो प्रथमा के एकवचन में 'उपशरदम्' रूप सिद्ध होता है।

रूपसिद्धिः — 'उपशरदम्'

- शरदः समीपम् (लौकिक विग्रह)
  शरद् ङस् उप (अलौकिक विग्रह)

'शरदः समीपम्' इस लौकिक विग्रह में 'शरद् ङस् उप' ऐसा अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति०' से सामीप्य अर्थ में विद्यमान 'उप' अव्यय का 'शरद्' शब्द के साथ समास
'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा के बाद
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (ङस्) का लोप होने पर
शरद् उप
'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से उप की उपसर्जन संज्ञा
'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग
उप शरद्
'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' से टच् (अ) आने पर
उपशरद् अ = उपशरद
'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजस०' से सु आने पर — उपशरद सु
'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा होने पर
'अव्ययादाप्सुपः' से प्राप्त सु लोप को
'नाव्ययीभावादतोऽत्वपञ्चम्याः' से बाधकर
'अमि पूर्वः' से पूर्वरूप होकर 'उपशरदम्' रूप सिद्ध होता है।

२/ उपजरसम् — जरायाः समीपम् (लौकिक विग्रह)
जरा ङस् उप (अलौकिक विग्रह)

'जरायाः समीपम्' इस लौकिक विग्रह में 'जरा ङस् उप' ऐसा अलौकिक विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति०' से सामीप्य अर्थ में 'उप' अव्यय का 'जरा' शब्द के साथ समास

'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (यहाँ ङस्) का लोप

जरा उप

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'उप' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से 'उप' का पूर्व प्रयोग

उप जरा

'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' से समासान्त टच् (अ) होने पर

'जरायाः जरस् च' से 'जरा' के स्थान में 'जरस्' आदेश होने पर — उपजरस् अ = उपजरस

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजस०' से सु विभक्ति

उपजरस सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा होने के बाद

'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप प्राप्त था, किन्तु

'नाव्ययीभावादतोऽत्वपञ्चम्याः' से सु के स्थान में 'अम्' आदेश होने पर

'अमि पूर्वः' से पूर्व रूप के बाद 'उपजरसम्' रूप सिद्ध होता है।